Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

License Information

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

JON

योना

योना

योना की पुस्तक अपने अद्‌भुत घटनाओं के लिये जानी जाती है, परन्तु इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य हमें परमेश्वर के विषय में सिखाना है। योना के अनुभव के द्वारा, सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता परमेश्वर प्रगट करते हैं कि यद्यपि वे दुष्टों पर अपना कोप उण्डेलने वाले हैं, तौभी वे उन पर दया करने के लिये भी उत्सुक हैं जो मन फिराते हैं—यहाँ तक कि उन पर भी जिन्हें हम शीघ्र ही दया के योग्य न मानें।

सन्दर्भ

योना उत्तरी इस्राएल के राज्य में एक भविष्यद्वक्ता थे, जब यारोबाम द्वितीय (ईसा पूर्व 793–753) का शासन राजनीतिक रूप से समृद्ध था परन्तु आत्मिक रूप से अंधकारमय था। यद्यपि यारोबाम के आत्मिक विफलताओं के बाद भी (देखें 2 रा 14:23–24), उनके राज्य की सीमा का विस्तार होता रहा, जैसा कि योना ने भविष्यद्वाणी की थी (2 रा 14:25), जो लगभग दाऊद और सुलैमान के महिमा के दिनों की तरह बढ़ रहा था (देखें 1 रा 8:65)। योना के समय में राष्ट्रवाद उच्च स्तर पर था।

उस समय नीनवे अश्शूरी साम्राज्य का एक प्रमुख नगर था। पिछले दशकों में अश्शूर की शक्ति अत्यधिक बढ़ गई थी। अश्शूर के शल्मनेसेर तृतीय (858–824 ईसा पूर्व) ने अपने साम्राज्य के प्रभाव को फिलिस्तीन तक फैला दिया था। उस काल के अश्शूरी अभिलेखों में उल्लेख है कि शल्मनेसेर ने अन्य राजाओं और इस्राएली राजा अहाब का, प्रसिद्ध कर्कर के युद्ध (853 ईसा पूर्व में) (1 रा 17:1–22:53) में सामना किया था। परन्तु इस्राएल में यहोआश (798–782 ईसा पूर्व) और यारोबाम द्वितीय (793–753 ईसा पूर्व) के शासनकाल में अश्शूर का क्षेत्र में प्रभुत्व कम हो गया, क्योंकि अगुआई असफल रही और सीमाओं पर निरन्तर विरोध चलता रहा। सम्भवतः ईसा पूर्व 755 के आसपास, जब अश्शूरी साम्राज्य अपने निम्न काल में था, तब योना ने नीनवे में प्रचार किया।

योना की नीनवे यात्रा के कुछ वर्षों बाद, अश्शूर ने तिग्लत्पिलेसेर तृतीय (744–727 ईसा पूर्व) के शासनकाल में पश्चिमी एशिया क्षेत्र में पुनः अपना प्रभाव स्थापित करना शुरू किया। योना के कुछ दशकों बाद, 722 ईसा पूर्व में, अश्शूर ने सामरिया पर चढ़ाई करके इस्राएल के उत्तरी राज्य का अन्त कर दिया। एक शताब्दी बाद, यहूदा के भविष्यद्वक्ता नहूम ने अश्शूर की व्यापक दुष्टता के कारण नीनवे और अश्शूर साम्राज्य के आने वाली विनाश की घोषणा की। ईसा पूर्व 612 में बाबेली ने नीनवे का नाश कर दिया। स्पष्टतः, योना के प्रचार से उत्पन्न हुई पश्चाताप की भावना स्थायी रूप से जड़ नहीं पकड़ सकी।

सारांश

योना की पुस्तक स्वाभाविक रूप से दो भागों में विभाजित होती है। अध्याय 1–2 योना द्वारा प्रभु की उस आज्ञा को अस्वीकार करने की घटना वर्णित है, जिसमें उन्हें नीनवे को उसकी दुष्टता के कारण आने वाले न्याय की चेतावनी देनी थी। नीनवे जाने के बदले, योना एक जहाज द्वारा विपरीत दिशा में चले गए (1:3)। परन्तु प्रभु ने अपने भविष्यद्वक्ता को ताड़ना देने के लिये एक प्रचण्ड आँधी भेजी। जब जहाज के अन्यजाति मल्लाहों ने जिस किसी देवता को उन्होंने अप्रसन्न किया था, उसे शान्त करने का प्रयास किया, तब योना "खोजे" गए और झिझकते हुए समुद्र में फेंक दिए गए। तब परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य प्रगट की—आँधी थम गई, और विडम्बना यह रही कि अन्यजाति मल्लाहों ने परमेश्वर की आराधना की, जबकि परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता सम्भवतः लज्जाजनक मृत्यु को प्राप्त किया। परन्तु परमेश्वर की योजना योना को बचाने की थी। एक "महा मच्छ" ने उन्हें निगल लिया, और वहीं, प्रतीत होता है कि योना ने मन फिराया (अध्याय 2)। तीन दिन और रातों के बाद, मच्छ ने योना को सूखी भूमि पर उगल दिया।

अध्याय 3–4 में, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता को नीनवे में प्रचार करने की आज्ञा को पुनः दोहराया, और इस बार, योना ने उनकी आज्ञा मानी। जब नीनवे के लोगों ने योना की चेतावनी सुनी, तो उन्होंने सामूहिक रूप से मन फिराया (अध्याय 3), और परमेश्वर ने उस न्याय को टाल दिया, जिसके विषय में योना ने घोषणा की थी (3:10)। एक और विडम्बना यह रही कि योना इस्राएल के शत्रुओं पर परमेश्वर की दया को स्वीकार नहीं कर सके। उनका क्रोध निराशा में बदल गया (अध्याय 4)। परमेश्वर ने एक बार फिर योना को ताड़ना देने के लिये प्रकृति पर अपनी शक्ति प्रगट की, एक पौधे को शीघ्रता से उगाकर और फिर नष्ट करके, जिसने सूर्य की तपिश से क्रोधित भविष्यद्वक्ता को छाया दी थी। यह पुस्तक अचानक

समाप्त हो जाती है, योना और पाठकों को परमेश्वर के अन्तिम प्रश्न पर विचार करने के लिये छोड़ते हुए: क्या परमेश्वर (और उनके लोगों) को "इतने बड़े नगर के लिये खेद महसूस नहीं करना चाहिए" और पापियों पर क्रोध की जगह दया की इच्छा नहीं करनी चाहिए?

लेखक

योना की पुस्तक उसके लेखक का उल्लेख नहीं करती; इसका शीर्षक इसके मुख्य पात्र के नाम पर रखा गया है। सम्भवतः योना या उनके किसी सहयोगी ने इस पुस्तक को लिखा हो।

शैली

अन्य भविष्यद्वाणियों की पुस्तकों के विपरीत, योना की पुस्तक भविष्यद्वाणी सन्देशों का संग्रह के बदले लगभग पूरी तरह से एक कथात्मक है। लेकिन क्या यह *ऐतिहासिक* कथा है? बहुत से लोगों ने इस पुस्तक को काल्पनिक माना है क्योंकि इसमें चमत्कारी घटनाएँ वर्णित हैं, और इसे किसी गैर-ऐतिहासिक साहित्यिक शैली, जैसे दृष्टान्त या शिक्षात्मक कहानी, के रूप में वर्गीकृत करने के विविध प्रयास किए गए हैं। हालाँकि, योना के लेखक ने अपनी बात को प्रभावी बनाने के लिये कुछ साहित्यिक रचनाओं (कविता, व्यंग्य और दृष्टान्तों के लिये सामान्य भाषा का उपयोग) का उपयोग किया, फिर भी यह पुस्तक स्वयं को एक ऐतिहासिक विवरण के रूप में प्रस्तुत करती है (देखें 1:1), और इसे एक ऐतिहासिक कथा के रूप में समझना सर्वोत्तम है जिसमें एक धर्मशास्त्रीय सन्देश है।

अर्थ और सन्देश

योना भविष्यद्वाणियों की पुस्तकों में अनोखा है। यह वर्णन करती है कि परमेश्वर ने एक भविष्यद्वक्ता को इस्राएल के शत्रु अश्शूर देश में भेजा, जिससे परिणामस्वरूप वहाँ व्यापक मन फिराव हुआ। योना ने जो पाठ सीखा, वही सम्पूर्ण इस्राएल देश को सीखने की आवश्यकता थी: "मेरा उद्धार केवल यहोवा से आता है" (2:9, शाब्दिक रूप से *उद्धार यहोवा ही से होता है*। उद्धार यहोवा ही से होता है, जिसे चाहते है उन्हें दे सकते हैं, और जिन्होंने परमेश्वर की दया प्राप्त की है उन्हें उसकी दया के प्रवाह को दूसरों तक पहुँचने से नहीं रोकना चाहिए, चाहे वे उनके शत्रु ही क्यों न हों (देखें अध्याय 4)।

उद्धार—चाहे वह शारीरिक हानि के खतरे से हो या न्याय से—प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर की संप्रभुता से सम्बन्धित है। जब परमेश्वर ने आँधी को शान्त किया, तब मल्लाहों का उद्धार हुआ। जब परमेश्वर ने एक महा मच्छ भेजी, तब योना डूबने से बच गया। समुद्र की गहराइयों सहित ऐसा कोई भी स्थान नहीं है जहाँ से परमेश्वर मनुष्य के प्राणों को छुड़ा और सुरक्षित न रख सके। इसी प्रकार, कोई भी जाति ऐसी नहीं है जिसे परमेश्वर न्याय न कर सके (3:4, 9) या न्याय से न बचा सके (3:10; देखें यिर्म 18:7–10)।

योना की पुस्तक यह पुष्टि करती है कि मसीह के आने से बहुत पहले ही परमेश्वर इस्राएल की सीमाओं से परे उद्धार पहुँचाने के लिये उत्सुक थे। इस्राएल उनकी वाचा की प्रजा थी, परन्तु आरम्भ से ही उनकी इच्छा थी कि इस्राएल के द्वारा सारी जातियाँ आशीष पाएँ (देखें उत 12:3)। परमेश्वर की जातियों के प्रति यह इच्छा है कि वे मूर्तियों को छोड़कर स्वर्ग के उस परमेश्वर को जानें जिन्होंने संसार की सृष्टि की (योन 1:9; देखें 2 पत 3:9)।